B.A. Part II Hons' Paper. III ~~Group~~.

Q. Trace the development and growth of Indo-Javanese literature.

इंडो-जावानी ~~भाषा~~ साहित्य

जावा में भारतीय शिक्षा और साहित्य का प्रवेश तो पांचवी शताब्दी में ही चुका था। जैसा कि पूर्णवर्मन के लेखों से प्रतीत होता है, जिनके ~~रचयिता~~ रचयिताओं को भाषा तथा व्याकरण का अच्छा ज्ञान था। चंगल के लेख के संजय के विषय में लिखा है कि सम्राट के पुत्र का पंडितों द्वारा आदर होता था और उसे ग्रंथों का मर्म ज्ञात था। श्रीमान यो माननीयो वृष्यजनपिक ऐश्वर्यस्पृहमभिर वेद) दिनाय के लेख में अगस्त्य की मूर्ति स्थापना के सम्बन्ध में वेदों के पारंगत पुरोहित, यति स्थापक इत्यादि था। उल्लेख मिलता है। सुमात्रा के अमोघपाश की मूर्ति पर अंकित ई० १२८६ के लेख में आदित्यवर्मन का उल्लेख है जो शास्त्रों का ज्ञाता था, चम्पा और कम्बुज के लेखों की भांति यहां के लेखों से शिक्षा विषय, परिपाटी तथा अन्य ज्ञान सम्बन्धी विषयों पर प्रकाश नहीं पड़ता है। हाँ, प्राचीन जावानी साहित्य में भारतीय ग्रंथों का अनुवाद हुआ तथा मूल रूप से इन्हीं विषयों को लेकर ग्रंथ लिखे गये। इस लिए वहां पर ये ग्रंथ भारतीय ग्रंथों से कुछ भिन्न से ही गये पर उनका ~~एक~~ उद्गम एक ही था। यद्यपि जावा के इतिहास में अमरमाला नामक ग्रंथ सर्वप्रथम लिखा गया जो अमरकोष पर आधारित था और शैलेन्द्र शासक जितेन्द्र की संरक्षता में लिखा गया। हिन्दी जावानी साहित्य के प्रमुख ग्रंथ रामायण की रचना भी लगभग इसी ~~कहत~~ में लिखा गया जो अमरकोष पर आधारित था और शैलेन्द्रशासक जितेन्द्र की संरक्षता में लिखा गया। महायान ग्रंथ 'कमहयानिकन' भी इसी काल में लिखा गया। हिन्द जावानी साहित्य के प्रमुख ग्रंथ 'रामायण की रचना भी लगभग इसी काल में लिखा गया किन्तु उसमें अग्नि परीक्षा के बाद राम-सीता का पुनर्मिलन होता है, सीता के त्याग की कथा नहीं है। और अंतिम दो सर्ग वाल्मीकि रामायण से नहीं मिलते हैं। विद्वानों ने इस ग्रंथ के रचयिता के संस्कृत तथा श्रौत ज्ञान के एवं तिथि के विषय में

Scanned with CamSc

मतभेद है। महाभारत का भी अनुवाद गद्य में धर्मवंश के समय में हुआ। आदि पर्व, विराट पर्व और भीष्मपर्व निश्चय रूप से इसी सम्राट के समय में लिखे गये, किन्तु आश्रमपर्व मौसलपर्व, प्रास्थानिक पर्व और स्वर्गारोहन पर्व बाद के समय के हैं। उद्योग पर्व की रचना अशुद्ध संस्कृत में है और विराट पर्व धर्मवंश तथा उसके साम्राज्य के नष्ट होने से १० वर्ष पहले ९९६ ई० में लिखा गया। महाभारत की कथा के आधार पर जावा में अन्य ग्रंथ भी लिखे गये जो उच्चकोटि के हैं। इनमें 'अर्जुन विवाह' नामक ग्रंथ ऐरलंग (१०१५-१०४२) की संरक्षकता में म्पु कणव द्वारा लिखा गया। काडिरी राज्यकाल में त्रिगुण द्वारा 'कृष्णायन' की रचना हुई जिसमें कृष्ण द्वारा रुक्मिणी के हरण तथा जरासन्ध के साथ युद्ध का उल्लेख है। पनतरम के मंदिर में इसी विषय को लेकर कई चित्र भी अंकित हैं। दूसरा ग्रंथ 'सुमन सान्तक' दशरथ के पिता अज की रानी इन्दुमती की पुष्प द्वारा मृत्यु पर आधारित है जिसका उल्लेख कालिदास ने अपने रघुवंश में किया है। इस ग्रंथ की रचना म्पु मौनेगुण ने की थी और इसमें श्री वर्षजय का उल्लेख है क्रोम के मतानुसार इन दोनों ग्रंथों की रचना १२वीं शताब्दी में हुई थी।

महाभारत के उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण और शल्य पर्वों पर आधारित भारतयुद्ध नामक ग्रंथ की रचना जयभय (११३५-११५७) ई० के समय में हुई थी उसका लेखक म्पुसेडह था। इस ग्रंथ में बहुत सी स्थानीय कथाओं का मिश्रण भी है और उसको म्पु पनुलुह ने किया था। इसी लेखक ने हरिवंश तथा घटोत्कचाश्रय भी उसी समय लिखा। प्रथम ग्रंथ में रुक्मिहरण और जरासन्ध युद्ध का उल्लेख है और दूसरे में शशिसुन्दरी के लिए घटोत्कचाश्रय की सहायता से अभिमन्यु द्वारा लक्ष्मण कुमार के साथ युद्ध करने का उल्लेख है। इसी कथा

Scanned with CamScanner

पर आधारित वयांग नृत्य की कई कथाएं भी प्रचलित हैं।

कामेश्वर द्वितीय (1185) ई० के समय समरदहनं की रचना हुई, जिसका आधार कालिदास का कुमारसम्भव था। रामायण के रचयिता योगेश्वर के कदाचित धर्मज और तनकुंग नामक दो पुत्र थे, जिनमें से प्रथम लुब्धक और 'व्रतसंचय' नामक पद्य काव्यों का रचयिता था। प्रथम ग्रंथ शिवरात्रि पर आधारित है और दूसरी संस्कृत छन्द शास्त्र से सम्बन्ध रखता है। कामेश्वर द्वितीय के समय में 'भौमकाव्य' की भी रचना हुई। इसमें पृथ्वीपुत्र भौम अथवा नरक द्वारा इन्द्र तथा अन्य देवताओं की पराजय और अंत में कृष्ण के हाथसे उसकी मृत्यु का उल्लेख है। 13 वीं शताब्दी के ग्रंथों में 'कृष्णान्तक' भी है जिसमें कृष्ण वंश के अंत की कथा है।

14 वीं शताब्दी में मजपाहित राज्य का उदीयमान युग था और इसमें प्रपंच द्वारा नागरकृतागम की रचना 1365 ई० में हुई। यही मजपहित शासक हयम वुरुक की जीवन घटनाओं पर आधारित है। प्रपंच ने अपने समकालीनों में बौद्ध लेखक म्पुतन्तुलर (मृतन्कुलर) का भी उल्लेख किया है। इसमें अर्जुन सहस्त्रबाहु तथा 'सुतसोम' अथवा 'पुरुषादशान्त' काव्यों की रचना की। दूसरे काव्य में सुतसोम और पुरुषाद राक्षस के बीच युद्ध का उल्लेख है और शैव तथा बौद्ध धर्मों के बीच युद्ध भी अन्तर नहीं रखा गया है। उपर्युक्त काव्य प्रायः भारतीय विषयों को लेकर लिखे गये। इनके अतिरिक्त और काव्य जिनकी तिथि नहीं निर्धारित की जा सकती है। निम्नलिखित थे इन्द्रविजय, जिसमें वृत्र की विजय तथा मृत्यु और नहुष का थोड़े समय के लिए इन्द्र होना वर्णित है। पार्थयज्ञ जिसमें अर्जुन के तप द्वारा शिव से अस्त्र प्राप्त करने का उल्लेख है, चिद्नोत्सव, घटमय हरिविजय जिसमें मन्दर पर्वत की नगानी से समुद्र

गन्धन का विवरण है। 'कालयवनात्मक' (कालयवनान्तक) जिसमें कंस के वध का बदला लेने के लिए कालयवन का द्वारका पर आक्रमण, मुचुकुन्द द्वारा उसका भस्म होना और अर्जुन द्वारा सुभद्रा के हरण की कथा है तथा रामविजय, रत्नविजय, पार्थविजय इत्यादि काव्य ग्रंथ हैं।

इन पौराणिक तथा धार्मिक ग्रन्थों के अतिरिक्त 'धर्मशून्य' 'धर्मसंवित्त' 'चाण्डकिरन' 'व्रतसंचय' तथा कुतायन और नीतिशास्त्र — कविनप्रचलित कालकी रचनाएं हैं। नीतिशास्त्र कविन में नीतिसार, पंचतंत्र, चाणिक्यशतक इत्यादि के श्लोकों का संकलन है। अनुशासनपर्व पर आधारित 'सर्वसमुच्चय' में धर्मानुशासनों का संग्रह है। बालि के ग्रंथ 'नवरुचि' में भीम के पराक्रम की कथाओं का उल्लेख है। पुराणों में ब्रह्माण्ड पुराण सबसे प्रमुख है और भारतीय ग्रंथ की भांति है। अगस्त्यपर्व में ऋषि द्वारा अपने पुत्र दृढ़स्य को संसार की रचना का वृतांत सुनाया गया है।

मध्य जावा का साहित्य भी विस्तृत है। वहाँ इस काल के ऐतिहासिक ग्रंथ गद्य तथा पद्य में लिखे गये। पद्यों में किडुंग नामक छंद का प्रयोग किया गया। ऐसे ऐतिहासिक ग्रन्थों में 'पररतों' सबसे प्रसिद्ध है जिसमें जावा के सिंहसारी और मजपहित कालों का इतिहास दिया गया है। इसकी रचना 1613 ई० में हुई। 'उसनजव' नामक ग्रंथ में बालि के इतिहास से सम्बंधित बहुत सी रचनाएँ हैं। हितोपदेश और पंचतंत्र पर आधारित बहुत सी कथाएँ भी जावा के सैत्रि साहित्य में मिलती हैं। इस प्रकार का साहित्य जावा के अतिरिक्त बालि स्याम और लाओस की भाषाओं में भी है। किडुंग छंद वाले 'सगसत्यवान' में सावित्री के जीवन की प्रसिद्ध घटना का विवरण है।

धार्मिक जावानी साहित्य के अन्तर्गत भारत से आयी मूल रचनाओं उनके अनुवाद तथा स्वतंत्र

रूप से जावानी धार्मिक ग्रंथों को रखा जा सकता है। चतुर्वेद से 'नारायणाथर्वशीर्षोपनिषद' का संकेत है जो बालि में प्रचलित है। वेद परिक्रम सार संहिता किरण में दैनिक उपासना सम्बन्धी मंत्रों का संकलन है। स्तोत्रों में शिव, विष्णु, बुद्ध, सूर्य, वायु, वरुण, तथा यम की प्रार्थना की गयी है। बुद्धदेव में कुछ कम याचना सम्बन्धी मंत्र है। आध्यात्मिक जीवनबिताने के लिए बहुत से मंत्रों का संकलन भी किया गया।

मूल धार्मिक संस्कृत ग्रन्थों के अनुवाद में भुवनकोश, भुवन-संक्षेप, तत्वसंग, हयंगमहाज्ञान एवं दार्शनिक ग्रंथ बृहस्पतितत्व, जिसमें बहुत से धर्मों का उल्लेख इत्यादि है। ये ग्रंथ मूल संस्कृत के अनुवाद किये हुए हैं। स्वतन्त्र रूप से लिखित जावानी ग्रन्थों में सप्तभुवन, कुजिशासन देवभासन है।

उपर्युक्त वृतान्त से प्रतीत होता है कि जावा का प्राचीन साहित्य भारतीय ग्रन्थों के मूलरूप उनके अनुवाद तथा स्वतन्त्र रचनाओं से ओतप्रोत है। यह साहित्य धार्मिक लौकिक न्याय तथा अन्यविषयों से सम्बन्धित है। मलाया में मुसलमानकाल से पहले की रचनाओं का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है। पर बाद के समय में भी भारतीय साहित्य पर आधारित रचनाएँ हुई जिनमें महाभारत तथा रामायण की कथाएँ ली गयी हैं।

जावा तथा मलाया के प्राचीन भाषा, संस्कृति तथा शैक्षिक क्षेत्रोंमें भारतीय अंशदान पूर्णरूप से मिला और इसकी छाप हिन्दुओं के राज्यकाल तक ही सीमित न रही। इस्लामी व्यापारियों ने देश के अपने धर्म के रंग, पर भारतीय संस्कृतिक परम्परा को वे वहां के निवासियों के जीवन से अलग करने में सफल न हुए। यह परम्परा धार्मिक क्षेत्र में भी कायम रही